अनमोल खजाना

विज्ञान प्रगति के मूल्य में जुलाई 2013 के अंक से पचास प्रतिशत की वृद्धि हुई है, फिर भी बाजार की अन्य पत्र/पत्रिकाओं की तुलना में इसकी विषय प्रस्तुति व पृष्ठ सज्जा के साथ ही ठोस व तथ्यात्मक जानकारियों का जो सागर इसमें मिलता है उस दृष्टि से देखा जाए तो इसका मूल्य तीस रुपए भी अधिक नहीं है। पत्रिका समय से सभी स्टालों पर आ रही है, सुलभता से मिल रही है, आपके पत्र के माध्यम से देश के कोने-कोने से विज्ञान पाठकों के मूल्यवान विचार सुझाव व शिकायतें तो सम्पादक महोदय के संज्ञान में आती ही हैं, संवाद की प्रक्रिया को निरन्तरता व गतिशीलता मिलने से जो सुलभता होती है, आगे बढ़ने के लिए उसका कोई मूल्य नहीं है। मेरा सुझाव है कि विज्ञान प्रगति पत्रिका को और अधिक लोकप्रिय बनाने व विस्तार देने के लिए दो कार्य किये जाएं : पहला विज्ञान प्रगति क्लब बनाया जाए और इसकी गोष्ठियाँ हर महीने जिला संयोजक/ संयोजिकाएं कराएं, जिसकी रिपोर्टिंग प्रकाशित की जाए। उनकी रचनाओं को प्रमुखता से विज्ञान प्रगति में प्रकाशित किया जाए। दूसरा सुझाव है कि पत्रिका में विज्ञान प्रगति पत्र-मित्र स्तंभ की शुरुआत की जाए जिसमें : नाम; कक्षा; वर्ग; रूचि; पता; मो.न.; ई-मेल आई.डी.; और चित्र प्रकाशित किया जाए, ऐसा करने से विज्ञान के प्रति लोगों की जागरूकता, रचनात्मकता व सृजनात्मकता बढ़ेगी।

श्री कृष्ण कुमार उपाध्याय, 8/262-बैरिहवां, गांधी नगर, बस्ती जनपद-बस्ती 272 001 (उ.प्र.) [मो. : 09839987104]

अनोखी पत्रिका

मैं पिछले पाँच वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मेरे लिए विज्ञान प्रगति एक विज्ञान गुरू से कम नहीं है। जब मैं विज्ञान की समस्याओं में फंस जाता हूँ तो यह पत्रिका मेरा मार्गदर्शन करती है। इस पत्रिका में मुझे विभिन्न प्रकार के लेखकों के महत्वपूर्ण विचारों का संयोजन पढ़ने को मिलता है। मुझे जून व जुलाई 2013 के अंक बहुत अच्छे लगे। डॉ. संजय कुमार जी की वर्ग पहेली बेहद अच्छी लगी। इस अनोखी पत्रिका में कृषि जगत, मौसम व संसार में घटित विभिन्न घटनाओं का संयोजन रहता है। ऐसे संग्रहों को ढूंढकर उन्हें लोकप्रिय भाषा में प्रकाशित करना बहुत कठिन कार्य होता होगा। डॉ. देवकी नंदन जी का मैं धन्यवाद अदा करता हूँ जो इतनी कड़ी मेहनत करके हम जैसे पाठकों तक इस महत्वपूर्ण ज्ञान को पहुँचा रहे हैं। मैं अन्य पाठकों को भी विज्ञान प्रगति पढ़ने के लिए सदैव प्रेरित करता हूँ और कहता हूँ कि इस पत्रिका में ज्ञानरस है और विज्ञान के बिना इस दुनिया में अंधेरा ही है। आप सभी का मार्गदर्शन सदैव ऐसे ही चलता रहे इसके लिए मैं विज्ञान प्रगति के सदस्यों को सच्चे मन से बधाई देता हूँ। विज्ञान प्रगति को समर्पित मेरी कुछ काव्य पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

विज्ञान को जन जन तक पहुँचाना जिसका काम है,
विज्ञान प्रगति ही उस पत्रिका का नाम है।

श्री विमल वर्मा, मोहल्ला दुर्गाप्रसाद, निकट कोल्ड स्टोर, बीसलपुर, जिला-पीलीभीत 262 201 (उ.प्र.)

व्यक्ति विशेष पत्रिका

मैं एम.एससी. (भौतिक विज्ञान) का छात्र हूँ और पिछले कई सालों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मुझे विज्ञान प्रगति के सभी लेख रोचक व ज्ञानपूर्ण लगते हैं। मुझे जुलाई 2013 का अंक प्राप्त हुआ जिसमें मुझे रेडियेशन बेल्ट स्टार्म प्रोब्स मिशन, मिशन के उपग्रहों की प्रयोगशाला जाँच, अन्य परीक्षण, लैब की जानकारियाँ प्राप्त हुईं। मैं अपने मित्रों को भी विज्ञान प्रगति के बारे में बताता हूँ। आज विज्ञान प्रगति का शिखर कई गुना ऊपर पहुँच चुका है तथा मैं उससे बहुत प्रेरित हूँ।

श्री उपेन्द्र प्रताप सिंह भदौरिया, सुपुत्र श्री अतरपाल सिंह भदौरिया, गाँव निवाड़ खास, पो. मानपुर, जिला - मुरादाबाद-244 001 (उ.प्र.) [मो. : 09536697465; 08954215513
ई-मेल : upendersingh234@gmail.com]

निरंतर प्रगति की ओर

मैं विज्ञान प्रगति का पिछले पाँच साल से नियमित पाठक हूँ और समय के साथ मैंने इसमें कई बदलाव भी देखे हैं। जुलाई 2013 का अंक पढ़ा अच्छा लगा। इसमें पहले से कुछ बदलाव किये गये हैं। चिन्तन मनन के अंतर्गत समय का सदुपयोग लेख बड़ा महत्वपूर्ण लगा। वास्तव में मनुष्य अपने जीवन का बहुमूल्य समय व्यर्थ में ही गंवा देता है। इसे पढ़कर हमें समय बचाने में मदद मिलेगी। इसके अतिरिक्त आमुख कथा तथा एक कहानी पढ़ कर अच्छा लगा। परमाणु ऊर्जा के बारे में व्याप्त भ्रम दूर हो गये। वास्तव में परमाणु ऊर्जा स्वच्छ ऊर्जा है। भारत में बिजली समस्या से बचने के लिए इसकी अति आवश्यकता है। विज्ञान प्रगति के मूल्यों में कुछ वृद्धि की गई है जो सराहनीय कदम है।

श्री राज महतो, सुपुत्र श्री राम उचित महतो, ग्राम + पोस्ट तैयवपु (महनार) थाना-देसरी, जिला वैशाली (बिहार)

गंभीर एवं रोचक जानकारियाँ

मैं विज्ञान प्रगति का वर्ष 1993 से नियमित पाठक हूँ। मुझे जुलाई 2013 का अंक अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं चिरस्मरणीय अंक लगा। 'वायुयानों की बर्फ' के इतिहास को जीवंत करके जानकारी उपलब्ध कराने के लिए निस्केयर को कोटि-कोटि धन्यवाद!

साथ ही 'कोयला खनन घातक रोग न्यूमोकोनियोसिस' की जानकारी भी काफी ज्ञानवर्द्धक एवं लाभप्रद रही। इस तरह के स्वास्थ्य अधारित ज्ञान को पूर्व प्राप्त करके हम अनेकों सम्भावित रोगों से बच सकते हैं। 'रेडियेशन बेल्ट स्टार्म प्रोब्स मिशन' एवं 'सरल हुआ सफल' दोनों ही लेख अत्यन्त विशिष्ट एवं गहन जानकारियों से युक्त लेख रहे। सबसे अधिक 'समुद्र के नीचे जमीन के ऊपर' लेख ने तो मन मस्तिष्क को काफी रोमांचित किया। अन्य सभी लेख भी काफी प्रशंसनीय रहे!

श्री रणधीर सिंह, सुपुत्र श्री युवराज आनन्द, ग्राम + पोस्ट-बाँध चातर, थाना + प्रखंड-अलौसी, जिला-खगड़िया (बिहार) [मो. : 08406023250]

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

विज्ञान प्रगति का जुलाई 2013 का अंक जो विशेष रूप से आकाश, पृथ्वी और समुद्र पर आधारित था, पढ़कर बहुत अच्छा लगा। यात्री विमानों से गिरने वाली बर्फ के विषय में जानकारी प्राप्त हुई, जो अत्यन्त रोचक थी। टी.बी. के विषय में दी गयी जानकारी संकलन योग्य लगी। इसी प्रकार अगर देखा जाय तो विज्ञान प्रगति का प्रत्येक लेख 'साइंस स्ट्रीम' के छात्रों के लिए महत्वपूर्ण होता है जो उन्हें आगे बढ़ाने में सहायक होगा।

न्यूक्लियर पावर कार्पोरेशन ऑफ इंडिया द्वारा प्राप्त चित्रकथा 'एक था बुधिया' (कहानी एक खुशहाल गाँव की) पढ़कर बहुत अच्छा लगा। अगर इसी तरह से ऐसे लेख प्रकाशित होते रहे तो ग्रास रूट लेवल के लोगों के अन्दर भी एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा होगा जिससे वे लोग आगे बढ़ सकेंगे।

श्री बृजेश कुमार, सिविल इन्जीनियरिंग (तृतीय वर्ष), राजकीय पॉलीटेक्निक कालेज, फैजाबाद (उ.प्र.) [मो. : 09984239008]

गागर में सागर

मैं म.प्र. लोक सेवा आयोग परीक्षा की तैयारी कर रहा हूँ। मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। यह पत्रिका हम जैसे प्रतियोगियों के लिए 'गागर में सागर' के समान है।

मुझे विज्ञान प्रगति के जुलाई 2013 के अंक में प्रकाशित लेख 'समय का सदुपयोग' ज्ञानवर्धक लगा। इस अंक की रोचक जानकारी भी ज्ञानवर्धक लगी। चन्द्रमा पर मानव के प्रथम कदम रखने की जानकारी तो ऐसी लगी जैसे हम कोई फिल्म देख रहे हों!

इस अंक के विशेष लेख 'सरल हुआ सफल' को पढ़कर बहुत अच्छा लगा।

श्री सचिन चौरसिया 'गंम्भीर' शिक्षा सदन, गढ़ी, रायसेन (म.प्र.) [मो. : 09752894722]

आकर्षक पत्रिका

विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष जून 2013 का अंक अति आकर्षक लगा। ये सघन जंगल/ लहलहाते हुए वृक्ष/उन पर लदे हुए

फल और वृक्षों पर अपना आवास बनाने वाले परिन्दे/ये मंद गति से बहने वाली नदी की कल-कल-छल-छल धाराएं/शरीर को रोमांच करती हुई ये हवाओं की मंद-गति इन सबकी कुछ वैज्ञानिकता होती है और इनका जिस पत्रिका में उल्लेख होगा वही विज्ञान पत्रिका विज्ञान प्रगति कहलायेगी।

विज्ञान प्रगति क्या है

चिन्तन की व्यापकता का समर्थन करता ये आसमान
विचारों की गहराइयों की सामंजस्यता का ये सागर
ज़ज़्बातों/भावनाओं की उ-र-व-र-क-ता की ये धरती उल्लेख
हो जहां वही है विज्ञान प्रगति।
गमों के बादलों का इतिहास
पक्षियों की चहचहाहट वृक्षों की आस
जीवों की जिन्दगी/जन्तुओं का सांस
लताओं/तृण रूपों जहान में परिहास
वर्णित है बिन्दू विज्ञान प्रगति के खास।
उन्मुक्त आसमान में पक्षियों का उड़ान है
आसमां की बुलन्दियों में सर्वाधिक मान है
कड़कती बिजली और बादलों का सम्मान है
उपरोक्त अनुस्वारों की विज्ञान-प्रगति से पहचान है।
गर्दिश की धूल/पतझण के फूल
बनाये जाते हैं चमन में वैज्ञानिकता के फूल
रेत की दुनिया/काटों के त्रिशूल
विज्ञान-प्रगति पत्रिका के यही हैं रसूल।
जहान को बनाने वाला मोहम्मद तो एक है
प्रकृति का रमणीय/संग्रह विज्ञान-प्रगति में लेख अनेक है।

श्री उमाशंकर मिश्र, आडिटर इ.एस.आइ., कारपोरेशन, वाराणसी, श्रम मन्त्रालय, भारत सरकार (उ.प्र.)
[मो. : 08005303398; 09455274474]

मोटे अनाज का खुल गया राज

विज्ञान प्रगति पत्रिका का प्रत्येक अंक एक नई खोज, नई जानकारी व मन के कौतुहल को शांत करने वाला होता है। जून 2013 का अंक नई जानकारी लिए हम सबके सामने उपस्थित हुआ। इस अंक में मोटे अनाज के राज का पता चला। इससे मेरे मन में बचपन से चले आ रहे सवाल आखिर मोटे अनाज हमारे शरीर के लिए क्यों उपयोगी हैं, का पता चला। मेरे पिता आज भी मोटे अनाज को ज्यादा पसन्द करते हैं। उनकी पसन्द के कारण का आजतक हमें पता नहीं लगा था लेकिन विज्ञान प्रगति पत्रिका ने पूरे राज को खोल दिया। मोटे अनाज हमारे जीवन में कितने उपयोगी हैं, पत्रिका ने इसकी जानकारी बारीकी से दी है। वैसे मोटे अनाज आज भी गाँवों में ज्यादा उपयोग में लाए जाते हैं। मोटे अनाज के ग्रहण करने के कारण ही शहरों की अपेक्षा गांवों के लोग ज्यादा स्वस्थ्य रहते हैं। चीना, मडुंआ, बाज़रा, कोदो, मक्का, बलटांगुन आदि ऐसे अनाज हैं जो गांव में ज्यादा उपयोग में लाये जाते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष यह अंक बहुत ही अच्छा रहा। हमारा पर्यावरण पर आधारित आलेख काफी रोचक लगा। ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ रही है त्यों-त्यों मानव अपनी कब्र स्वयं खोद रहा है। इस भौतिकतावादी युग में मानव अपने हित की कामना कर रहा है न कि प्रकृति की। ऐसे में पर्यावरण संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

इस तरह के अंक प्रकाशित करने के लिए सम्पादक मंडल को बहुत-बहुत धन्यवाद!

डॉ. सत्य प्रकाश, सुपुत्र डॉ. राम विष्णु प्रसाद, ग्राम-बरवाँ, पो.-मीरगंज, जिला-गोपालगंज 841 438 (बिहार)
[मो. : 09471040259; 09661609850
ई-मेल : satyaprakashsahara@gmail.com]

अविस्मरणीय पत्रिका है विज्ञान प्रगति

विज्ञान प्रगति वह अंतहीन वृक्ष है जिसकी ज्ञान रूपी विस्तृत छाया पथिक रूपी पाठकों को अपने नीचे विश्राम करने के लिए विवश कर देती है। इसकी अनंत शाखाएं विशिष्ट विज्ञानोवित, लेख, विचार, परिकल्पना, वैज्ञानिक शोध व प्रयोगों के घोतक हैं। इस पर मधुर कलरव करते पक्षी उन विद्वान श्रेष्ठ व वैज्ञानिक लेखकों को सूचित करते हैं, जिनकी उपस्थिति इसकी विशिष्टता को और विस्तृत कर देती है। वैज्ञानिक जानकारियों से सराबोर विज्ञान प्रगति वैज्ञानिक साहित्य के क्षेत्र में अपनी अमिट व अविस्मरणीय पहचान के साथ अपनी प्रगति के अन्तहीन पथ पर हमेशा अग्रसर हो रही है।

'विज्ञान प्रगति' के साथ हमारे परिवार का नाता बेहद पुराना रहा है। मेरे पिताजी इसके नियमित पाठक रह चुके हैं, तदोपरांत मेरे भैया भी इसके नियमित पाठकों में से एक हैं। इस पत्रिका के प्रति मेरा आकर्षण मार्च 2004 के अंक से है। विज्ञान प्रगति में प्रकाशित 'विज्ञान की शान, ये वैज्ञानिक महान' व 'सवाल-जवाब' मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। इसके अलावा 'विज्ञान गल्प', 'वैज्ञानिक अट्टाहास' विज्ञान क्विज़ भी सराहनीय लगते हैं। 'विज्ञान प्रगति' का जून 2013 का अंक भी ज्ञान से भरपूर लगा। इसमें प्रकाशित 'हरित रंग पर्यावरण के संग' के अंतर्गत हरित रसायन की महत्ता की जानकारी मिली जो पर्यावरण के लिए अपेक्षाकृत उचित है। 'विज्ञान प्रगति' अपने आप में एक संपूर्ण पत्रिका है। इसका प्रत्येक अंक अद्वितीय एवं नवीनता से भरा होता है। यह पत्रिका मेरे लिए अविस्मरणीय है क्योंकि सन् 2012 में हुयी विज्ञान कॉंग्रेस में 'भारत में गणित, भूत वर्तमान और भविष्य' के विषय पर मेरे लेख में 'विज्ञान प्रगति' के फरवरी 2007 के अंक में प्रकाशित 'गणित मनोरंजन' ने मेरी काफी मदद की थी।

मेरे विचार में भारत की संपूर्ण वैज्ञानिक पत्रिकाओं में 'विज्ञान प्रगति' अपनी उत्कृष्टता, नवीनता संपूर्णता एवं विविधता के कारण अव्वल है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि यह पत्रिका प्रगति की पराकाष्ठा को स्पर्श करे तथा हमें विज्ञान के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराए।

श्री कुमार अमर नाथ, सुपुत्र श्री हर्षनाथ पाण्डेय, उ.वि. भलुनीधाम, रोहतास (बिहार) [मो. : 08002255218]

मनमोहक पत्रिका

मैं बी.एससी. (द्वितीय वर्ष) का छात्र हूँ। मैंने पहली बार विज्ञान प्रगति का जुलाई 2013 का अंक पढ़ा। इस अंक के सबसे महत्वपूर्ण और रोचक स्तंभ सवाल-जवाब और बुधिया की कहानी लगे। विज्ञान प्रगति के प्रत्येक लेख में दिये गये चित्र उस लेख को भली-भांति समझने में अत्यन्त सहायक होते हैं। वास्तव में इस अद्वितीय पत्रिका को 'विज्ञान का खजाना' कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सभी की तरह मुझे भी विज्ञान प्रगति के अगले अंकों का बहुत बेसब्री से इन्तजार रहेगा। परन्तु अफसोस इस बात का है कि इतने दिनों तक मुझे विज्ञान प्रगति के बारे में जानकारी न होने के कारण मेरे हाथ से कई महत्वपूर्ण अंक निकल गये। आगे से मैं विज्ञान प्रगति के हर अंक का अध्ययन करूँगा। सभी लोगों को इसकी खूबियों से भी अवगत कराऊँगा ताकि वे इसके हर अंक का पूर्ण रूप से उपयोग करें। आशा करता हूँ कि कई वर्षों बाद भी 'विज्ञान प्रगति' के द्वारा सभी का ज्ञानवर्धन जारी रहेगा।

श्री. पवन कुमार यादव, सुपुत्र श्री इन्द्रदत्त यादव, ग्राम-इटौरा, पोस्ट-युधिष्टिर पट्टी, जिला-आजमगढ़, 223 221 (उ.प्र.)
[मो.: 09415327801; ई-मेल : pavan041094@gmail.com]

ज्ञानवर्धक पत्रिका

मैं एक इण्टरमीडियेट विद्यालय में शिक्षक हूँ और विज्ञान प्रगति के जुलाई 2013 अंक से इस ज्ञानवर्धक पत्रिका का पाठक बना हूँ। मुझे विज्ञान प्रगति पत्रिका पढ़कर बहुत अच्छा लगा। इस अंक की आमुख कथा व सवाल-जवाब पढ़कर बहुत महत्वपूर्ण जानकारी मिली। सवाल-जवाब मुझे बहुत अहम लगे क्योंकि एक शिक्षक होने की वजह से सवाल-जवाब से परिचय होता रहता है। इस शीर्षक के माध्यम से मेरी जिज्ञासाओं और समस्या को संतुष्टि मिली है। 'क्षय का भय आज भी' अच्छा लेख लगा। एक कहानी- 'एक था बुधिया' पढ़कर अच्छा लगा।

वैज्ञानिकों का जीवन-परिचय पढ़कर असीम आनन्द की प्राप्ति हुई, क्योंकि वो हमारे आदर्श हैं और बचपन से इनके बारे में हम पढ़ते रहे हैं, लेकिन विस्तृत जानकारी नहीं मिल पाती थी। मुझे यह पत्रिका बहुत ज्ञानवर्धक लगी।

श्री अनिल कुमार, सुपुत्र श्री नत्थूलाल, हरशूनगला, पी.ओ.-अहरो, तं.-मिलक, जिला-रामपुर 244 921 (उ.प्र.)

ज्ञान का महासागर

मेरा नाम प्रखर श्रीवास्तव है। मैं पिछले दो वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। विज्ञान प्रगति में विज्ञान का सम्पूर्ण ज्ञान उपलब्ध हो जाता है। अतः इसे 'ज्ञान का महासागर' कहना उचित होगा। इसमें संपादित होने वाले सभी कॉलम ज्ञानवर्द्धक होते हैं। इसके लिए मैं विज्ञान प्रगति के सभी कार्यकर्त्ताओं का दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पानी की कमी हो रही है। मानव अपनी जरूरतों का 75% पानी नहाने व कपड़ा धोने में नष्ट करता है। अगर हालात यही रहे तो आगे आने वाले दिनों में पीने के पानी की कमी हो जाएगी। हम लगातार भूमि के गर्भ से पानी निकाल रहे हैं, इससे पृथ्वी के अंदर उपस्थित गर्म मैग्मा और गर्म होता जा रहा है जिससे आए दिन भूकम्प, भूस्खलन तथा ज्वालामुखी फटने की खबरें सुनाई देती हैं। अतः विज्ञान प्रगति पढ़ने वाले सभी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि वे पानी को कम से कम बर्बाद करें, जिससे आगे आने वाली पीढ़ी को प्यास से न मरना पड़े।

श्री प्रखर श्रीवास्तव, IB/3A/3 चक भटाई, नैनी, इलाहाबाद